पुस्तक का नाम	*कथा-कहानी का शास्त्र*
लेखक	गिजुभाई बधेका
गुजराती से अनुवाद	दीनानाथ दवे
मूल्य	रु0 200.00
संस्करण	प्रथम, 2003
प्रकाशन	अंकित पब्लिकेशंस 55/74 रजत पथ मानसरोवर-जयपुर-302020

लच्छा सिंह*

सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् गिजुभाई ने अपना संपूर्ण जीवन शिक्षा के प्रसार तथा शिक्षा के क्षेत्र में नए-नए प्रयोगों के लिए समर्पित किया था। गिजुभाई ने स्वयं अध्यापन किया, मांटेसरी पद्धति के आलोक में नए शैक्षिक प्रयोग किए तथा शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए नए कार्यक्रमों का उन्मेष किया। उन्होंने अपने शैक्षिक अनुभवों को लिपिबद्ध किया। गिजुभाई रचित साहित्य हमारी अमूल्य निधि है।

बच्चों को कहानियाँ बहुत भाती हैं। बड़े भी बच्चों को कहानी सुनाना चाहते हैं। लेकिन कई बार शिक्षकों तथा अभिभावकों के समक्ष यह प्रश्न उठता है कि बच्चों को कहानी कौन-सी सुनाएँ, कैसे सुनाएँ, कहानी से क्या-क्या किया जा सकता है? इन्हीं सब सवालों का समाधान दिया गया है गिजुभाई बधेका रचित किताब **कथा-कहानी का शास्त्र** में। जब तक कथावाचक के समक्ष कहानी का उद्देश्य स्पष्ट नहीं होता, तब तक कहानी के चयन, कथावस्तु की क्रमबद्धता तथा कहने की छटा को लेकर असमंजसता की स्थिति बनी रहती है। इसीलिए पुस्तक का प्रथम प्रकरण है– **कहानी कहने के उद्देश्य**।

कहानी में सभी आनंद लेते हैं। इसीलिए कहानी सुनाने वाले व्यक्ति के समक्ष प्रथम उद्देश्य श्रोता को शुद्ध एवं संपूर्ण आनंद देना होना चाहिए। कहानी सुनाने का प्रथम उद्देश्य आनंद प्रदान करना ही हो सकता है क्योंकि इसका आदि स्वभाव आनंद है।

कहानी आनंद देने वाली चीज़ है तो निश्चय ही कहानी को विद्यालयी शिक्षण में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होगा। यही कारण है कि आज अनेक देशों में कहानी के द्वारा कई-कई विषयों को पढ़ाने की विधि व्यवहार में आने लगी है। प्रथम उद्देश्य से प्रतिफलित होने वाला यह दूसरा उद्देश्य है। हर तरह के विषय-शिक्षण की शुरुआत कहानी सुनाकर की जा सकती है।

* 157, फर्स्ट फ्लोर, फ्लैट नं.-1, शिवाजी रोड, शंकर आश्रम के पास, मेरठ-250001

कहानी का तीसरा उद्देश्य है - श्रोताओं की कल्पना शक्ति का विकास। कहानी द्वारा कल्पना शक्ति को विकसित करने का उद्देश्य सुनिश्चित करना वांछनीय है।

कहानी के द्वारा श्रोता कहानी की भाषा से परिचित होता है। शिक्षा की दृष्टि से कहानी का चौथा उद्देश्य है **विद्यार्थी की भाषा शुद्धि की दक्षता**।

कहानी लोकसाहित्य का अंग है। लोक-कथाओं में लोक-संस्कृति प्रवाहित रहती है। लोकसंस्कृति से परिचित कराना भी कहानी का एक उद्देश्य है। कहानी की बनावट ही ऐसी होती है कि उसमें विचार, संकलन अत्यंत सरल और सहज होता है। इस सरलता और अकृत्रिमता का ही परिणाम है कि कहानी का सूत्र अविच्छिन्न भाव से चलता रहता है। इस प्रकार कहानी स्मरण शक्ति का भी विकास करती है।

कहानी के उद्देश्य जानने के बाद सवाल उठता है कि बच्चे को कैसी कहानियाँ सुनाई जाएँ? इसका जवाब दिया गया है दूसरे प्रकरण में। जिसका शीर्षक है - **कहानी का चुनाव**।

इस प्रकरण में विभिन्न कहानियों के उदाहरणों के द्वारा पहले यह स्पष्ट किया गया है कि कहानी के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए किन-किन आधारों पर कहानी का चयन करना चाहिए। इसके बाद इस बात पर भी चर्चा की गई है कि कहानी का उद्देश्य सफल हो और भाषा के विकास को पोषण मिले इसलिए कहानी चयन करते समय कहानी की भाषा पर भी विचार करना ज़रूरी है। प्रकरण के अंत में लिखा है - प्रत्येक कहानी का चयन करते समय स्वयं से तीन सवाल पूछने ज़रूरी हैं-

1. क्या कहानी बच्चों को आनंद देगी?
2. क्या कहानी भाषा की दृष्टि से योग्य है?
3. क्या कहानी हितकारी है? अर्थात् कहानी सुनाने से बच्चे के जीवन को निर्दोष एवं स्वस्थ मार्ग मिलेगा?

पुस्तक का तीसरा प्रकरण है– **कहानियों का क्रम**। कहानी सुनाने के लिए कहानी का क्रम तय करना जितना आवश्यक है, उतना ही यह काम कठिन है। इस प्रकरण में कहानियों के वर्गों तथा प्रकारों की कुछ कहानियों के नाम तथा उदाहरण देकर चर्चा की गई है। कहानी के क्रम में पाँच श्रेणियाँ रखी हैं। पहली श्रेणी तुकबंदी युक्त कथा-कहानियों की, दूसरी श्रेणी कल्पित-कहानियों की, तीसरी श्रेणी शूरवीरता संबंधी कहानियों की, चौथी श्रेणी अद्‌भुत और प्रेम कहानियों की, पाँचवी श्रेणी में सामान्य कहानियाँ शामिल हैं। अंत में वर्ग के अनुसार बच्चों की आयु पर भी विचार करने की बात कही गई है।

कहानी को कहने योग्य बनाना भी एक कला है। चौथे प्रकरण **कहानी को कहने योग्य कैसे बनाएँ** के अंतर्गत इसी विषय पर चर्चा की गई है। प्रत्येक कहानी में अपनी विशिष्टता होती है पर सर्वांगीण दृष्टि से कोई भी कहानी पूर्ण नहीं होती।

पठनीय कहानी को कथन योग्य कहानी बनाते समय भाषा-शैली में आवश्यक बदलाव, कथा में आवश्यक परिवर्तन किस प्रकार करें,

यह अनेक कहानियों के उदाहरण द्वारा दर्शाया गया है ताकि पाठक इस बात से अवगत हो सकें कि कहानी का कथ्य कई बार बच्चे के स्तरानुसार होते हुए भी उसमें गुंथा हुआ आदर्श बहुधा अव्यवहारिक और अनिष्टकर होता है। इसी प्रकरण में कहानी क्या है? विषय पर भी चर्चा की गई है।

कहानी को कहने योग्य बनाने के बाद बात उठती है कि कहानी कैसे सुनाएँ कि सुनने वाला मंत्रमुग्ध हो जाए। **कहानी किस तरह कहें** प्रकरण इसी विषय पर आधारित है। गिजुभाई लिखते हैं- शिक्षकों को पहले यह बात समझनी है कि कहानी एक कला है और कहानी कहना भी एक कला है।

कहानी कहने वाले व्यक्ति का प्रयोजन यह होना चाहिए कि वह बच्चों को रस-ग्राही बनाए। कहानी सुनाने के मूल में मुख्य उद्देश्य बच्चों को आनंद प्रदान करना है। इसके लिए अनेक विधियों से कहानी को सरस बनाकर परोसने के बदले कहानी कला को अपनी संपूर्णता के साथ विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए।

अक्सर कक्षा में शिक्षक विद्यार्थियों को कहानी सुनाने के बाद उनसे सुनी गई कहानी सुनाने को कहते हैं। इस संबंध में गिजुभाई का विचार है– शिक्षा में कहानी का विशिष्ट स्थान है। लेकिन बच्चों को कहानी सुनाकर वापिस उनसे कहलवाने की पद्धति अपनाए जाने से विद्यार्थियों को भी नुकसान होता है और स्वयं कहानी को भी क्षति पहुँचाती है। निश्चय ही कहानी कहलवाने से विद्यार्थी की भाषा विकसित होती है अत: कहानी का एक उद्देश्य इसके माध्यम से विद्यार्थी की भाषा का विकास करना माना जाता है लेकिन कहानी उगलवाकर विद्यार्थी की भाषा का विकास करने का मोह शिक्षको को त्याग देना चाहिए।

कहानी कैसे सहेजें, कहानी को सरस कैसे बनाएँ, आदि किन बातों का ध्यान कहानी सुनाते समय रखें यह सब विस्तार से बताते हुए गिजुभाई लिखते हैं- वार्ताकार को एकाधिक कहानियों की तैयारी रखनी चाहिए। अनगिनत कहानियाँ जाननी ज़रूरी हैं और हर समय आदमी से कहानी सुनाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

कहानी कहने का समय छठे प्रकरण के अंतर्गत कथा-कथन में समय की महिमा पर ध्यान देने पर चर्चा की गई है। कई कहानियाँ निश्चित समय पर अच्छी लगती हैं, जबकि कई कहानियाँ स्वच्छंदी होती हैं। कई कहानियाँ अपना समय दूसरों से स्वीकृत कराती हैं जबकि कई कहानियाँ दूसरों के समय के अधीन होती हैं। इस प्रकार कथा-कथन के लिए खास समय होता भी है और नहीं भी। इस संबंध में लेखक का सुझाव है कि कहानी कहने के संबंध में कहानी कहने वालों को अपने स्तर पर स्वतंत्रतापूर्वक विचार कर लेना चाहिए।

कहानी के द्वारा शिक्षण-प्रक्रिया को भी आनंददायी बनाया जा सकता है। कक्षाओं में विविध विषयों के शिक्षण के लिए विभिन्न पद्धतियाँ आयोजित की जाती हैं। कथा-कहानी की पद्धति की चर्चा पुस्तक के **कहानी का विशिष्ट उपयोग** नामक सातवें प्रकरण के अंतर्गत की गई है। गिजुभाई के अनुसार– कहानी कहने की इच्छा रखने वाले शिक्षक को

अपने शिक्षण विषय का उत्तम ज्ञान होना चाहिए। कहानी बुनने की चतुराई तभी फलदायी सिद्ध होती है कि जब कहानी में गूँथा जाने वाला विषय प्रामाणिक होने के साथ-साथ कहानी के वेश में भी हो।

शिक्षण के दौरान कहानी सुनाने के बाद बच्चों से उसका अभिनय करवाया जाए तो बच्चे बहुत खुश होते हैं। कहानी के पात्र बनकर वे आनंद विभोर हो जाते हैं **कहानी और नाट्य प्रयोग** ही आठवें प्रकरण का विषय हैं। जिसके अंतर्गत जानकारी दी गई है कि शिक्षक किस प्रकार कहानी को नाटक रूप में बदलवाए।

कहानी के द्वारा बड़ी सरलता और सहजता के साथ बच्चे नीति की बातें आत्मसात् कर लेते हैं, **कथा-कहानी और नीति शिक्षण** नामक नवें प्रकरण का विषय इसी पर आधारित है।

लोकवार्ताएँ और कल्पनाशक्ति नामक दसवें प्रकरण में किस प्रकार लोककथाएँ कल्पना शक्ति के विकास में सहायक हैं, की चर्चा के पश्चात् ग्यारहवें प्रकरण **लोककथाओं का साहित्य** में लोकसाहित्य के विभिन्न अंगों की चर्चा के पश्चात् लोककथाओं के विभिन्न प्रकारों– प्राणियों की कथाएँ, प्राकृतिक घटनाओं एवं दृश्यों संबंधी कथाएँ, वनस्पति जीवन की कथाएँ, वार-त्योहार की कथाएँ, बाल-कहानियाँ, कहावतों का मूल बताने वाली कहानियाँ, विनोद वार्त्ताएँ तथा चातुरी की वार्ताएँ, पौराणिक कहानियाँ, शूरवीरों की कहानियाँ, प्रेम कहानियाँ, भक्तों की कहानियाँ, सतियों की कहानियाँ, ऐतिहासिक दंत कथाएँ, और स्थानबद्ध कथाएँ, भूत-प्रेतों की कहानियाँ, कौटुम्बिक कहानियाँ, टोनों-टोटकों की कहानियाँ, लोक-कथाएँ आदि से पाठकों को अवगत कराया गया है। इस प्रकार यह प्रकरण कथा साहित्य, उसके प्रकार तथा उसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है, की विवेचना करता है।

प्रकरण अंतत: के अंतर्गत इनसे संबंधित जानकारी है-(1) कहानी के बारे में थोड़ा सा, (2) कहानी कहने वाला खास शिक्षक, (3) कहानी का जलसा, (4) ऐतिहासिक कहानियों का कथन (5) कहानी की वस्तु (6) इतिहास शिक्षण की विधि। निष्कर्ष रूप में गिजुभाई लिखते हैं, सभी बच्चों को कहानियों की घटनाएँ याद रहती हैं, उनके स्थल और पात्रों के रिश्तों की भी उन्हें अच्छी खासी जानकारी रहती है। रटने पर भी जो याद नहीं रहता वह बच्चों को सहज ही याद रह जाता है।

पुस्तक के अंतिम प्रकरण **कथा-कहानी का भंडार** में इस बात की जानकारी दी गई है कि कहानी कहने वाला वांछित कहानियाँ कहाँ से प्राप्त करे।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि **कथा-कहानी का शास्त्र** पुस्तक तेरह विभिन्न प्रकरणों में कहानी सुनाने से जुड़ी लगभग सभी ज़रूरी बातों से पाठकों का परिचय कराती है। पुस्तक की भाषा बड़ी सरल तथा सरस है। इस पुस्तक की एक विशेषता यह भी है कि इसमें चर्चा की जा रही बातों को और भी स्पष्ट करने के लिए स्थान-स्थान पर छोटी-छोटी कहानियाँ दी गई हैं जिनसे पुस्तक की रोचकता और भी बढ़ जाती है। इस पुस्तक को पढ़ना भी कहानी सुनने/पढ़ने सदृश आनंददायी है।

❑❑❑

परख

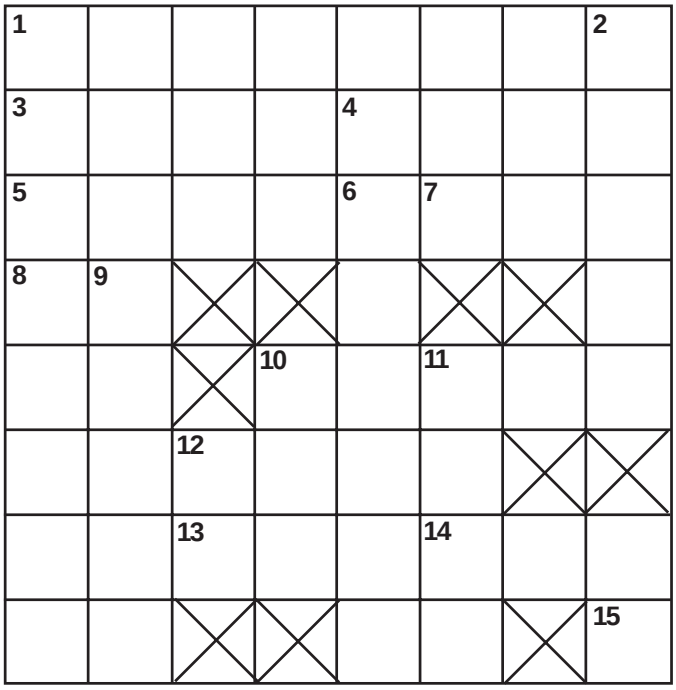

संकेत

दाएँ से बाएँ

1. प्रसिद्ध शिक्षाविद् जिन्होंने कहानी को शिक्षण का माध्यम बनाया।
3. पंचतंत्र के लेखक
4. अलादीन की कहानियों का पात्र
5. प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी
7. बच्चों की एक पत्रिका
10. बच्चों की एक पत्रिका
12. के.आर. नारायण की कहानियों का एक पात्र
14. कथा का पर्यायवाची
13. रवींद्रनाथ ठाकुर की एक प्रसिद्ध कहानी 'काबुलीवाला' का एक पात्र
14. मैक्सिम गोर्की का एक उपन्यास

ऊपर से नीचे

2. प्रसिद्ध लेखक जो मूलत: अँग्रेज़ी में लिखते हैं, पर जिनकी हिंदी में अनूदित कहानियाँ बच्चों में काफी लोकप्रिय हैं
6. गौतम बुद्ध के जीवन चरित पर आधारित कथाएँ।
8. जे.एन. रॉलिन्स लिखित प्रसिद्ध पुस्तक शृंखला
9. रात में सुनायी जाने वाली प्रसिद्ध अरबी कहानियाँ
11. कहानी का एक पात्र जिसका आधा शरीर मानव तथा आधा मछली का है।

सही उत्तर जानने के लिए इसी अंक के पृष्ठ 14 को देखें।